प्रातः क्लास 25/5/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। जब ओमशांति कहते हैं तो बड़े हुल्लास से कहते हैं हम आत्मा शांत स्वरूप हैं। अर्थ कितना सहज है। बाप भी कहेंगे ओमशांति। दादा भी कहेंगे ओमशांति। वह कहते हैं मैं परमात्मा हूँ, यह कहते हैं मैं आत्मा हूँ। तुम सभी हो सितारे। सभी सितारों का बाप भी चाहिए ना। गाया जाता है सूर्य–चाँद और सितारे। तुम बच्चे हो मोस्ट लक्की सितारे। उनमें भी नम्बवार हैं। जैसे रात को चंद्रमा निकलता है फिर सितारों में कोई डम, कोई बड़े तीखे होते हैं, कोई चंद्रमा के आगे होते हैं। सितारे हैं ना। तुम भी ज्ञान सितारे हो। चमकता है भृकुटि के बीच अजब सितारा। बाप कहते हैं यह सितारे तो बड़े ही वण्डरफुल हैं। एक तो बहुत छोटी बिंदी है, जिसको कोई को पता नहीं है। आत्मा ही शरीर से भिन्न–2 पार्ट बजाती है। यह बड़ा ही वण्डर है। तो तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं– कोई कैसे, कोई कैसे। बाप उनको बैठ याद करते हैं जो सितारे अच्छी रीत चमकते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं उनको करंट मिलती है। तुम्हारी बैटरी भरती जाती है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने लिए। सर्चलाइट मिलती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सभी कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं वह बहुत ही प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। बाप दिल लेने वाला है ना। दिलवाला मंदिर भी है। अभी दिलवाला या दिल लेने वाला मंदिर। किसकी दिल लेने वाला? तुमने देखा है ना। प्रजापिता ब्रह्मा बैठा है ज़रूर उनमें शिवबाबा की प्रवेशता है और फिर तुम देखते हो ऊपर में स्वर्ग की स्थापना भी है। नीचे बैठे हैं तपस्या में। यह तो छोटा मॉडल रूप में बनाया हुआ है। तो जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, बहुत मददगार हैं, महारथी,घोड़ सवार, प्यादे हैं ना। यह मंदिर यादगार का बहुत एक्युरेट बना हुआ है। तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है। अभी तुमको कितनी रोशनी मिली है। और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। भक्तिमार्ग में तो मनुष्यों को जो सुनाते हैं सत्–2 करते जाते हैं। वास्तव में है झूठ। इसको सत समझते हैं। अब बाप तो सत्य है। वह ही तुमको सत्य सुनाते हैं, जि(ससे) तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाप तो कुछ भी मेहनत नहीं कराते हैं। कुछ भी नहीं। सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में बैठ गया है। तुमको समझाते तो बहुत सहज है; परन्तु टाइम क्यों लगता है? नॉलेज में वा वर्सा लेने में टाइम नहीं लगता। टाइम लगता है पवित्र बनने में। मुख्य है याद की यात्रा। यहाँ तुम आते हो तो यहाँ एडीशन जास्ती होता है याद की यात्रा में। घर में जाने से इतना नहीं रहता। यहाँ भी नम्बरवार हैं। कोई तो यहाँ बैठे बुद्धि में यह नशा होगा हम बच्चे, वह बाप है। बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है। दिव्य दृष्टि दे रहा है। सर्विस कर रहा है। तो उस एक को ही याद करना चाहिए। और कोई तरफ बुद्धि जाना नहीं चाहिए। हम यहाँ ब्राह्मणी को बिठाऊँ तो वह पूरी रिपोर्ट दे सकती है। किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कोई क्या करते हैं, किसको झूटका आता है– यह बता सकती है। आगे बैठाते थे। अब विचार आता है कि बिठावें, पर फिर उनको अटेंशन ही इस तरफ न चला जावे, मूँझ न जावे; इसलिए छोड़ देता हूँ। जो सितारे अच्छी सर्विसएबुल हैं उन्हों को ही देखता रहता है। बाप का लव है ना। स्थापना में मदद करते हैं हूबहू कल्प पहले मिसल। यह राजधानी स्थापन हो रही है। अनेक बार हुई है यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इसमें फिक्र की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ हैं तो संग का रंग लगता जाता है। फिक्र कम होता जाता है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजाई ले आए हैं। सिर्फ कहते हैं– मीठे–2 बच्चों, पतित से पावन बनने लिए बाप को याद करो। अभी जाना है स्वीट होम, जिसके लिए ही भक्तिमार्ग में तुम माथा मारते हो; परन्तु एक भी जा नहीं सकते। अभी बाप को याद करते रहो, स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। अलफ और बे। बाप को याद करो और 84 के चक्र को याद करो। आत्मा को 84 के चक्र का ज्ञान हुआ है। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो तो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सुबह को उठकर तुम बुद्धि में यह रखो अब 84 का चक्र हमने पूरा किया। अब वापस जाना है। इसलिए बाप

को याद करना है और चक्र को याद करना है। तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे। यह तो सहज है ना; परन्तु माया तुमको भूला देती है। माया के तूफान है ना। यह दीवों को हैरान कर देती है। माया बड़ी दुस्तर है। इतनी शक्ति है जो बच्चों को भूला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे–2 बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह सभी हैं गुप्त बातें। कितने भी तुम कोशिश करेंगे; परन्तु याद कर न सकेंगे। फिर कोई की बुद्धि भटक कर स्थिर हो जाती है, कोई फट से स्थिर हो जाते हैं। कोई को कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं। इनको माया का युद्ध भी कहा जाता है। कर्म अकर्म बनाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ तो रावण राज्य है नहीं तो कर्म विकर्म भी होते नहीं। माया होती ही नहीं जो उल्टा काम करावे। रावण और राम का खेल है। आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प है रावण राज्य। दिन और रात। संगमयुग पर सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। अभी तुम ब्राह्मण समझते हो रात पूरी हो दिन शुरू होना है। वह वर्ण वाले थोड़े ही समझते हैं। सन्यासी आदि कुछ नहीं जानते हैं। यहाँ भी मकानों में आकर रहते हैं। उन्हों के शिष्य लोग फट से मकान का प्रबंध कर देते हैं। फिर बहुत आवाज़ से गीत आदि बैठ गाते हैं। तुमको तो जाना है आवाज़ से परे। तुम तो अपने बाप की याद में ही मस्त रहते हो। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा समझती है बाप को याद करना है। भक्तिमार्ग में शिवबाबा–2 तो करते आए हैं। शिव के मंदिर में तो शिव को बाबा ज़रूर कहते हैं। ज्ञान कुछ भी नहीं। अभी तुमको तो ज्ञान मिला है कि वह शिवबाबा है। उनका यह चित्र है। वे तो लिंग ही समझते हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं। लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढ़ाते हैं। अब बाप तो है निराकार। निराकार पर लोटी चढ़ावेंगे वह क्या करेंगे? साकार हो तो स्वीकार करे। निराकार पर दूध आदि चढ़ावेंगे वह क्या .....। बाप कहते हैं दूध आदि जो चढ़ाते हो वह फिर तुम ही पीते हो। भोग भी तुम ही खाते हो यहाँ ... मैं सम्मुख हूँ ना। आगे इनडायरैक्ट करते थे, अभी तो डायरैक्ट है। नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं। सर्चलाइट दे रहे हैं। बच्चे समझते हैं मधुबन बाबा के पास ज़रूर आना चाहिए। वहाँ हमारी बैटरी चार्ज अच्छी तरह होती है। वहाँ तो घर में गोरख धंधे आदि में अशांति ही अशांति रहती है। इस समय सारे विश्व में अशांति है। तुम जानते हो अभी हम शांति स्थापन कर रहे हैं योगबल से। बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से। कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो। जो कुछ एक्ट होती है वह फिर भी होगी। तुम्हारे पास पास्ट हिस्ट्री के फोटोज़ आदि भी हैं। जो भी तुम समझाते हो पास्ट में ऐसे–2 हुआ। सिर्फ चित्र देखने से क्या समझेंगे। ज़रूर उस पर समझाना पड़े। बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ति हो गए। मुझ माशूक को कितना याद करते थे। अभी मैं आया हूँ तो कितना छोड़कर चले जाते हैं। माया कैसा थप्पड़ लगा देती है। मम्मा–बाबा को ड्रिल सिखलाते थे, डायरैक्शन देते थे ऐसे करो, नीचे हो बैठे। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगे। वे भी गुम हो गए। तो यह सब समझाना पड़े ना। हिस्ट्रियाँ तो बहुत बड़ी है। कृष्ण के चरित्र क्या होंगे। जन्म लिया और नर्स ले जाती है। यहाँ माफिक थोड़े ही किचड़ा आदि होता है। आजकल तो पेट चिरा कर बच्चे निकालने का फैशन निकला है। दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान बुद्धि को पता जाता है। कितने छी–2 फैशन हैं। बहुत गंद है। बाप अपनी बच्ची को भी स्त्री बनाकर गंदा कर देते हैं। एक ऐसा केस चला था, बच्ची को खराब किया था। जब कोर्ट में उनसे पूछा गया तो बोला यह तो हमारा ही पैदा किया हुआ फूल है। बाबा अनुभवी भी तो है ना। बाबा को अपनी हिस्ट्री भी सारी याद है। छिनल टोपी, नंगे पाँव दौड़ता रहता है। मुसलमान लोग बहुत प्यार करते थे। बहुत खातरी करते थे। मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया। बाजरे का डोडा खिलाते थे। यहाँ भी बाबा ने 15 दिन प्रोग्राम दिया था डोडा और छाछ खाने का। और कुछ भी बनता नहीं था। बीमार आदि सभी के लिए यह बनता था। कुछ किसको हुआ नहीं। और ही बीमार लोग तंदुरुस्त हो गए। देखते थे आसक्ति टूटी हुई है। यह नहीं होना चाहिए कि यह चाहिए, यह चाहिए। चाहना को चुहरी कहा

जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं माँगने से मरना भला। बाप खुद ही जानते हैं बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाबा ने पूछा था ना बाप को जो बाप भी समझते हैं, बच्चा भी समझते हैं वह हाथ उठावे। तो सभी ने उठाया। हाथ तो झट उठा लेते हैं। जैसे बाबा पूछते हैं ल०ना० कौन बनेंगे, झट हाथ उठावेंगे। यह पारलौकिक बच्चा भी ज़रूर एड करते हैं। यह तो माँ–बाप की कितनी सेवा करते हैं। 21 जन्मों का वर्सा दे देते हैं। बाप जब वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर बच्चों का फर्ज है बाप की संभाल करना। वह जैसे सन्यासी बन जाते हैं। जैसे इनका लौकिक बाप था, वानप्रस्थ अवस्था हुई तो बोला, हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे, हमको वहाँ ले जाओ। (हिस्ट्री सुनाना) तुम हो ब्राह्मण। प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर। सभी का पहला पिता। मनुष्य सृष्टि का पहला पिता। उनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। न ब्रह्मा–विष्णु–शंकर ही ज्ञान का सागर है। ज्ञान का सागर है शिवबाबा। अभी वह बेहद का बाप है। तो उनसे वर्सा मिलना चाहिए ना। वह निराकार परमपिता परमात्मा कब–कैसे आया, जो उनकी जयन्ती मनाते हैं। यह कोई को पता नहीं। निराकार आत्माओं को सभी को अपना–2 शरीर मिलता है। यह तो गर्भ में नहीं आते हैं। समझाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ बहुत जन्मों के अंत में वानप्रस्थ अवस्था में। मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी वानप्रस्थ अवस्था कही जाती है। तो अभी बाप कहते हैं– बच्चे, तुमने पूरे 84 जन्म लिए हैं। यह है बहुत जन्मों के अंत का जन्म। हिसाब तो जानते हो ना। तो मैं उनमें प्रवेश करता हूँ। कहाँ आकर बैठता हूँ? इनकी आत्मा जहाँ बैठी है उनके बाजू में आकर बैठता हूँ। जैसे गुरुलोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते हैं ना। इनका भी स्थान यहाँ है। मेरा भी यहाँ है। कहता हूँ– हे आत्माएँ, मामेकम् याद करो तो पाप नाश हो जावेंगे। मनुष्य से देवता बनना है। यह है राजयोग। भक्ति (मुर्दा)बाद, ज्ञान जिंदाबाद होता है। यह पुरानी दुनिया ही खत्म होनी है। नई दुनिया के लिए ज़रूर राजयोग चाहिए। सतयुग आदि में है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। कलियुग अंत में क्या था? अनेकानेक धर्म हैं। बाकी आदि सनातन देवी–देवता धर्म है नहीं। बाप कहते हैं मैं आता हूँ आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। फाउंडेशन लगाने। बाप जानते हैं आधा कल्प तुमने भक्ति की है। गुरु लोग तो अनेकानेक हैं। सद्गुरु एक है। वही सत्य है। बाकी तो सभी हैं झूठ। आदि सनातन देवी–देवता धर्म सत्य था ना। बाप है ही सत्य। यह भी बच्चों को समझाया है। एक है रुद्रमाला। दूसरी है रुण्डमाला विष्णु की। इसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे। जिस माला को भक्तिमार्ग में तुम सिमरते हो; परन्तु जानते नहीं हो कि यह किसकी माला है, ऊपर में फूल कौन है। किसकी माला फेरते हैं, फिर मेरु क्या है, दाने कौन हैं। समझते कुछ भी नहीं। ऐसे ही राम–2 कहते माला फेरते हैं। समझते कुछ भी नहीं। राम–2 कहने से ही समझते हैं सभी राम ही राम हैं। सर्वव्यापी के बात का अंधियारा इससे निकलना है। माला का अर्थ ही नहीं जानते। कोई कह देते 100 माला फेरो। बाबा तो अनुभवी है ना। 12 गुरु किए हैं। आखरीन फिर डिसमिस कर दिया। 12 का अनुभव लिया। ऐसे भी बहुत होते हैं। अपना गुरु होते भी फिर औरों के पास जाते हैं कि कुछ अनुभव मिल जाए। माला आदि फेरते हैं बिल्कुल ही अंध(श्रद्धा)। माला पूरी कर फिर फूल को नमस्कार करते हैं। शिवबाबा फूल है ना। माला के दाना तुम अनन्य बच्चे बनते हो। तुम्हारा फिर सिमरण चलता है। इनको कुछ भी पता नहीं। वह तो कोई राम–2 कहते, कोई कृष्ण को .... करते। अर्थ कुछ नहीं। श्री कृष्ण शरणम् कह देते। अभी वह तो सतयुग का प्रिंस था। उनकी शरण कैसे लेवें? शरण तो ली जाती है बाप की। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। 84 जन्म ले पतित बने हो। तो शिव(बाबा) को कहते हैं हे फूल, हमको भी आप समान फूल बनाओ। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।